INDIA'S FIRST ONLINE BILINGUAL MAGAZINE BY STUDENTS

A COMPLETE MAGAZINE
FOR ALL AGE GROUPS

हिन्दी व अंग्रेजी -
दोनों भाषाओं में

An initiative by-

Blue Thunder Student Association, Motihari

Affiliated to -- VIPNET, Indian govt. (V0541305)

OUR DEDICATED TEAM

EDITOR-IN-CHIEF

Akash Kumar is a student of class XI Science at Jamia Millia Islamia, New Delhi. He hails from Motihari in Bihar. Fondly called Man Of Sky by his friends, he is a passionate reader.
Email- akash@jeevanmag.tk Facebook- www.facebook.com/akashmanofsky

EXECUTIVE EDITOR

Nandlal Mishra is pursuing B.Tech in Humanities (1st year) from Delhi University. He is basically from Samastipur in Bihar. He is fondly called Sumit by his friends.
Email- nandlal@Jeevanmag.tk Facebook- www.facebook.com/nandlal.sumit

SUB-EDITOR(S)

Kuldeep Kumar (XI Science, Jamia Millia Islamia, New Delhi)

Shahid Iqbal (XI Science, Jamia Millia Islamia)

Aminesh Aryan (XII Arts, Kendriya Vidyalaya, Kankarbagh,Patna)

Anamika Sharma (XII Science, Convent Of Jesus & Mary, Shimla)

Kumar Shivam Mishra (BA(H) English, Commerce College, Patna)

Akshay Akash (B.Tech in Humanities (1st Yr.) Delhi University)

Ankit Nayak (Xth, St. Joseph Public School, Samastipur)

PUBLIC RELATION OFFICERS

Aryan Raj (XI Science, Allen Career Institute, Kota)

Faisal Alam (XI Science, Shantiniketan Jubilee School,Motihari)

Rishabh Amrit(XI Science, Shantiniketan Jubilee School,Motihari)

Aashutosh Pandey (XI Science, M.S. college, Motihari)

Ankit Kundan Dubey (B.A-Pol. Science, M.S. College, Motihari)

Alok Kumar Verma (XIIth Science, Lucent international school, Patna)

Radhesh Kumar (K. Singh Vision Classes, Patna)

Cover Page Photo by- Chaitanya Sharma (6 years)
http://chaitanyakakona.blogspot.in

Graphics Designer- Anil Bhargava (Cartoonist for Dainik bhaskar, Rajasthan Patrika etc.)

R.I.P Madiba (Nelson Mandela) His Quotes @ the bottom of the page.

Publisher- Blue Thunder Student Association (A VIPNET club), C/O Vijay Kr. Upadhyay, West of Dr. Shambhu Sharan, Belbanwa, Motihari-845401, Bihar. Facebook – www.facebok.com/bluethunderstudentassociation
Delhi Contact- Akash kumar, iqbal Manzil, Jamia School Hostels, Jamia Millia islamia, New Delhi-25
Phone- +91 7827992817 or
Nandlal Mishra, V.K.R.V hostel, North Campus, University of Delhi, New Delhi Phone- +91 9631021440

A Word To You

Happy New Year 2014!

It's our pleasure to present before you the fourth issue of Jeevan Mag. It's after a long gap that we've come with the PDF issue but forgive us; we were engaged much. But from now on, we are obliged to publish Jeevan Mag monthly & the revival could not have been possible without your constant support & cooperation. In particular, I would like to thanks Nandlal bhaiya, the executive editor of this magazine, for his dedication towards the initiative.

We started our journey some 20 months ago when we were a small group of children concentrated mainly in Motihari. I remember the day when I went to a typical cyber cafe with Rishabh (PRO, Jeevan Mag) to start the website. The foundation stones of the magazine consist of Kuldeep, Pawan, Aryan, Manish, Ravi etc.- My classmates of Shantiniketan Jubilee School in Motihari. Nitesh Upadhyay & Sameer Sumdarshi are 2 other people behind the initiative who aren't with us today because of their personal reasons. We hadn't imagined that the sapling would grow with such a great pace. Right from being aired on Sahara Samay to getting featured in Japanese newspaper 'Hon' & On Hindustan's cover page, our team has acquired great wealth in form of your love. Today, we stand as a distinct web magazine attracting visitors from across the globe. Your love has been well-received in the form of e-mails & phone calls but I would like to dwell repeatedly that please comment on the posts on the site too.

Now, let's have a look at the contents of this issue. We have a nice range of English & Hindi poems as well as Urdu ghazals. We are starting some new columns which we'll continue in our upcoming issues. From tech tips to movie reviews & from a short story to a satire – We are determined to make your experience edutaining.

As we are going monthly, we need creative & innovative people. Join us & be the face of the change. May the year 2014 give your life a new dimension with happiness all around you & success at your steps.

Yours

Akash Kumar

Ed-in-chief (Jeevan Mag)

काव्य सुधा

सफ़लता को है तेरा इंतज़ार

उठ, देख सूरज की किरणों को है तेरा इंतज़ार।
क्यूँ डर रहा है तू उनका सामना करने से?
क्यूँ खो रहा है तू अपनी मंज़िल,
और भटक रहा है तू इस अँधेरे में?
किरणों का कर इस्तक़बाल,
क्यूँकि दुनिया को है तेरा इंतज़ार।

वह रो रही है मिलने की आस में,
क्यूँ दूर खड़ा है उससे?
आखिर क्या चाह है तेरी?
क्यूँ चल रहा है
इन गुमराह रस्तों पर?
ये गुमराहियाँ ही हसेंगी तुझ पे,
जब होगी वह तुझसे दूर।

उठ, लड़, झगड़ इन सारी परेशानियों से।
अभी भी वह नहीं है तुझसे दूर,
आज भी है उसे तेरा इंतज़ार।
छोड़ दे इन सारी फ़रेबखुशियों को,
जा हासिल कर अपनी ज़िन्दगी तू।
देख की सारी खुशियों को है तेरा इंतज़ार।

(*शाहिद इकबाल* टीम जीवन मैग की उर्दू विभाग के समन्वयक सदस्य हैं। आप जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली में ग्यारहवीं विज्ञान के छात्र हैं और पश्चिमी चंपारण, बिहार से ताल्लुक रखते हैं।)

थोड़े से नमकीन शब्द

मेरे थोड़े से नमकीन शब्द
रखकर देखना
तुम अपनी कड़वी जुबान पर
जीवन जब मीठेपन से भर जाए
तुम्हें जरुरत पड़ेगी
मेरे आवश्यकता से थोड़े ज्यादा
तीखे, कड़वे, कसैले शब्दों की।
सच मानों
चाहे तो चखकर देख लो
यह शब्द उतने नमकीन नहीं
जितने तुम्हारे तलवार की धार है
यह काटते जरुर हैं
लेकिन तुम्हारी तलवार की माफ़िक
लहूलुहान नहीं करते
जिस्म को।
और यह शब्दों का कड़वापन क्या ?
लहू से ज्यादा तो
किसी हाल में नहीं हो सकता ?
तुम तो लहू पीकर ही जिन्दा रहे हो
फिर मेरे शब्दों से परहेज क्यों ?
एक बार चखकर देखना
कुछ नहीं तो स्वाद के नयेपन के लिए!

(*संजय शेफर्ड* बीबीसी गैलरी एशिया के लिए लेखन कार्य करते हैं।)

ये कई नदियाँ

एक ही पर्वत से -
निकलती ये कई नदियाँ
उछलती- कूदती- इठलाती
गाती-झूमती बहारों में
अलग-अलग
अपनी धाराओं में -
बहती ये कई नदियाँ
एक ही सागर से -
मिलती ये कई नदियाँ
फिर धाराओं का यह-
भेद कैसा ?
यह तो है-
बस कर्तव्य जैसा
संपूर्ण धरा को
एक ही जल से -
सींचती ये कई नदियाँ |

नंदलाल मिश्रा

राजनीति के खेल में,विकल है सारे संत |
हरदम सिक्का न चले, कभी तो होगा अंत ||
कैसे सबको मिलेगा,शिक्षा व रोजगार |
दीमक भ्रष्टाचार का ,सुस्त पडी सरकार ||
नित मर्यादाएं टूटती ,टूटे सब्र के बाँध |
लूट से कैसे अब बचे ,सम्पति अतुल अगाध ||
शिवनाथ सिंह 'शिव'

Where you stand depends on where you sit.

हँसी की एक कक्षा

एक कक्षा का है दृश्य-
शिक्षक कर रहे हैं छात्रों का इंतज़ार,
कक्षा में सबकी अनुपस्थिति कर रही उन्हें बेक़रार।
तभी दिख पड़ते हैं आते छात्र दो-चार,
मास्टर जी करते हैं उन पर शब्दों का वार-
कहाँ थे इतनी देर तलक?
सर, फेसबुक पर कर रहे थे बक-बक।
तो फिर आने की क्या थी ज़रुरत?
बंटने वाले हैं आज साईकिल के पैसे,
तो फिर हम आते नहीं कैसे?
जय-जय भारत भाग्य विधाता,
ऐसे पाजी बच्चों से अब तू ही बचा भारतमाता।
अरे बेवकूफों, तुम हो पढाई में साढ़े-बाईस,
आते हो स्कूल खाने करी और राइस।
आज जब प्रिंसिपल सर करेंगे तुम्हारा टेस्ट,
पाएंगे तुम सबको नीचे से बेस्ट।

अनुपम, तू बता कौन थे पृथ्वीराज?
सर, पृथ्वीराज थे फ़िल्मी दुनिया के सरताज़।
वाह नासपीटे कर दिया तूने कमाल,
अभी करे देता हूँ तेरे गाल लाल।
इतिहास की पुस्तक पढ़ी है,
या पढ़ी है फिल्म की?
सर, इतिहास की तो आप यहाँ पढ़ते हैं,
फिल्म की पढ़ पाता हूँ घर पर,
कहें तो आप को भी पढाऊँ ला कर।
चुप बे मुरख, रंजन तू बता-
हम पानी पीते हैं क्यूं?
सर, क्योंकि पानी को हम खा सकते नहीं यूं।
हे भगवान, अब तू ही कर मेरा कल्याण,
घबराइए नहीं सर, ज़ल्द होगा आपका महाप्रयाण।
अबे गधे! शुभ-शुभ बोल।
सर, धीरे कहिये नहीं तो खुल जाएगी आपकी पोल।
हम अगर गधे, तो आप गधों के मास्टर जायेंगे,
गधा जगत में विशिष्ट स्तर को पाएंगे।
अच्छा, २१वीं सदी के भारत के उज्जवल भविष्य,
कुतुबमीनार कहाँ है, है पता?

नहीं सर। चल हो जा बेंच पर खड़ा।
सर, दिख नहीं रहा यहाँ से भी,
ओफ़्फ़ोह! करनी होगी शिकायत तेरे पिताजी से ही।
तेरा घर कहाँ है, तू बता?
सर, पोस्ट ऑफिस के सामने।
पोस्ट ऑफिस कहाँ है मुझे नहीं पता।
सर, मेरे घर के सामने।
अबे, दोनों कहाँ है ये बता।
सर, आमने-सामने।
ओह, ऐसे-ऐसों को पढाना ही है मेरी ख़ता।

तभी होता है प्रिंसिपल सर का प्रवेश,
शिक्षक महोदय के शब्द रहते जाते हैं शेष।
बच्चे हो जाते हैं खड़े।
मास्टर जी जा रहे हैं नीचे गड़े-गड़े।
बच्चों, करने जा रहा हूँ मैं तुम्हारी प्रगति की जांच,
आने ना देना अपने मास्टर जी की मेहनत पर आंच।
तुम बताओ अनुपम, फ्रांसीसी क्रांति कब शुरू हुई?
सर, १७८९ में।
वाह, बैठ जाओ।
तुम बताओ रंजन, होते कितने काल?
सर, तीन- भूत, वर्तमान और भविष्यत् काल?
सच में इन्होंने पढाई की है लाजवाब।
प्रिंसिपल सर का जाना,
और मास्टर साहब की जान में जान आना।
बच्चों, मत किया करो इतना मजाक,
बताओ कोई प्रश्न पूछना है एट लास्ट।
सर, केवल पूछना रह गया है यह अब,
परीक्षा के प्रश्न-पत्र किस प्रेस में रहे हैं छप?

आकाश कुमार

A good head and a good heart are always a formidable combination.
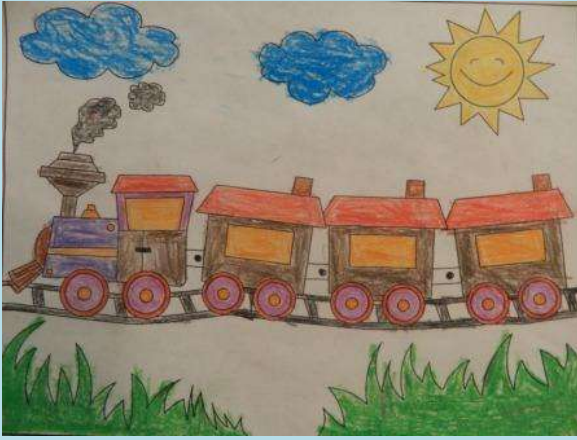
रेलगाड़ी

(चित्र-चैतन्य शर्मा)

रेलगाड़ी की छुकछुक,
बच्चा देखे टुकटुक।
जाने किधर को आई,
कितनों को है अपने संग लाई।
पूरब को या पश्चिम को,
उत्तर को या दक्षिण को।
मालगाड़ी में भरा लबालब माल है,
सवारी गाड़ी में लोगों की भरमार है।
न जाने इनमें से कौन,
हो जाए आर्यभट्ट या न्यूटन।

आर्यन कुमार
कक्षा 6
केन्द्रीय विद्यालय, मोतिहारी

स्वाद-ए-उर्दू

ग़ालिब़ की खेराज-ए-अकीद़त पर विशेष

ख़्वाब की एक ख़बर आम करूं
चंद अल्फाज़ उनके नाम करूँ
मुझको ग़ालिब ने ये दुआ दी थी
ज़िंदगी तुमको रास आ जाए
ज़ेरे आब तेरी प्यास आ जाए
मेरी हालत अजीब है लेकिन
होश की पगड़ी बाँध रक्खी है
दुनियादारी सवार है मुझ पर
जिस पे सज्दा-गुज़ार होता जुनूं
वो मुसल्ला कभी ना बिछ पाया
इश्क की नमाज़ खाली गई
मुझको ग़ालिब की क्या दुआ लगती
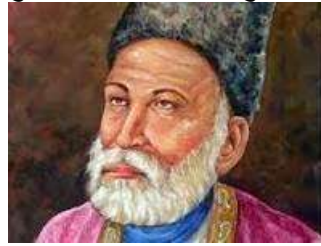
(गुलरेज़ शहज़ाद उदयीमान शायरों की ज़मात में एक जाना-पहचाना नाम हैं। आप मोतिहारी, बिहार से ताल्लुक रखते हैं और स्थानीय स्तर पर साहित्य को आम आवाम़ तक पहुँचाने के लिए किए गए कार्य काबिले-तारीफ़ हैं।)

गज़ल

क्यूँ खुद को हर शाम जलाता है ये,
कोई राज है चराग के सीने में भी ,
मौत से कम नही गम-ए-हयात भी 'राघव' ,
तमाम झंझट हैं ज़िन्दगी जीने में भी ,
अकेले नही होती दुनिया में तकमील किसीकी ,
खुद की आब नही होती है नगीने में भी ,
दिलों से तो कब का मिटा डाला था तुमने ,
अब तो नही रहता खुदा खैर मदीने में भी .

(राघवेन्द्र त्रिपाठी "राघव" क्लस्टर इन्नोवेशन सेंटर, दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र हैं। आपकी उर्दू साहित्य में गहरी अभिरुचि है।)

Education is the most powerful weapon you can use to change the world.

YOU AND ME

Nights were long and days lost
I could not regain the gone trust .
Feelings meant only loneliness
There was not any trace of happiness.

Standing alone I had to think
What was there beyond the brink.
Everything foggy everything dry
And I could not abstain to cry.

If winter comes,
can spring be far behind?
I had heard this several times
Thinking this I always wondered
Did the springs get outnumbered?

Will the winters be infinite?
Or the fire within me again ignite?
My lost self was hard to regain
And I suffered from a lot of pain.

Waiting for someone to arrive
And give me the strength to survive.
Actually I myself was required
To become strong and get revived.

But the inevitable always happens
Even if the situation worsens.
Then you need problems to end
What better can you get than a friend.

This was me till you arrived
Soul was lost only body survived.
Your arrival shortly made a change
My problems lost what they had gained.

Birds sang loud and the sun rose high
Elated were the stars of sky.
Bounty of sprouts began to flourish
When you were always present to nourish.

I found my lost confidence in you
Enjoying the moments together that were few.
Enraptured by your mere presence
I could feel the unnoticed essence.

Gradually as the time passed by
With ups and downs going low and high.
We were together in every situation
And did not fear the boundaries of separation.

I was me once again
Out of all the agony and pain.
All because of the assurance
That you were always omnipresent.

But the winter again arrived
And this time I bravely survived.
But you were lost into it
Even without making me realise.

I can never face that situation
When you don't share and care with resignation.
Then I always begin to ponder
What was the lack in my love I wonder.

Come back being the same as you were.
Don't know what changed you when and where.
Be assured that I am the same
With more affection , love and care.

I know the confusion will be resolved
Each and every problem will be solved
I am with you and you with me
Let all the worthless boundaries dissolve
Do not heed to world if you are right
I am always well within your sight
Just close your eyes and look within you
Rest assured we will always be together and bright.

Akshay Akash is a student of B.Tech in humanities (1st year) at Cluster Innovation Centre, University of Delhi.

It always seems impossible untill it's done.

17 and still a kid

When you open up your heart
and say what you think,
You're 17 and still a kid.
When you laugh out loud
and stare at clouds,
You're 17 and still a kid.
When you walk like you
don't care about anyone,
You're 17 and still a kid.
When you play with kids,
You're 17 and still a kid.
When you try to learn football,
You're 17 and still a kid.
When you don't want to date
and leave things on your fate,
You're 17 and still a kid.
When you talk to god
and tell him things are going wrong,
You're 17 and still a kid.
When you dream of building
underground elevators all over
your city.
So that it's easy to meet
your friends,
You're 17 and still a kid.
When you feel clouds are magical,
You're 17 and a kid.
When you tell your heart,
"Hearty don't be sad, not
everyone can be so raw
and clean when you are 17".
You feel so light as if flying
and so proud of your thoughts,
Trust me it's not easy to be 17
and still a kid.

STAY RAW STAY HAPPY

Anamika Sharma is a student of class XII at Convent of Jesus & Mary, Shimla. She is a poetic buddy.

नया साल आयेगा

नया साल आयेगा,
नया साल आयेगा।
खुशियों की सौगात लायेगा।
अच्छी आदतों को सिखना,
बुरी आदतों को छोड़ना है।
यहीं सफलता की कुंजी है।
बड़ों का आदर करना,
छोटों को प्यार करना है।
आपस में मिलजुलकर रहना है,
इसी में हमारी खुशी है।
नया साल आयेगा,
नया साल आयेगा।

स्पर्श बरनवाल

कक्षा 7 स्प्रिंग डेल्स पब्लिक स्कूल, मोतिहारी

चन्द शेर अर्ज

आने वाली नस्लें, रश्क करेंगी हम-अश्रों ,
कि हमने " सचिन " को देखा था ||

ये उनको आप कहने का नतीजा निकला
वो तुम से तू तक चले आये हैं आजकल ||

तेरे शहर में मय में भी नहीं होता ,
जो नशा मेरे शहर के पानी में हैं ||

तुझसे मिलने की एक धुंधली सही उम्मीद मुझे है |
इसी चराग के दम पर तो शब्-ए-ज़िन्दगी कटती है||

तुझसे मिलने की तमन्ना लिए दिल में अपने,
तेरे शहर में हर बार आता हूँ, चला जाता हूँ |

राघवेन्द्र त्रिपाठी "राघव"

Appearances matter- and remember to smile.

एक भारत ऐसा भी

आज पैरों से लिपट रो पड़ा भारत
बचपन की रंगत में भीख मांग रहा भारत।
मासूम उस चेहरे से झलक रही थी आशा
पैरों से विकलांग वो मांग रहा था पैसा।।

बालों सी उलझी उसकी भविष्य की रेखाएँ थीं
जीवन में उसकी अनगिनत सीमाएँ थीं।
सैकड़ों यात्रियों ने उसकी हथेली पर कुछ रुपये रखे थे
शायद वो मंदिर-मस्ज़िद नहीं था जहाँ लोग पेटी भरते थे।।

वो अक्श ढूँढ़ता रहा एक पालिसदार खंभे में
अपनी ही परछाई से कंधा मिला चल पड़ा भारत।
अपने ही लोगों से भीख मांग रहा भारत
अचानक स्टेशन पे आज पैरों से लिपट रो पड़ा भारत।।

(अमिनेष आर्यन केंद्रीय विद्यालय, कंकड़बाग, पटना में बारहवीं मानविकी के छात्र हैं। आप हाजीपुर, बिहार से ताल्लुक रखते हैं और कम्युनिज़्म में आपकी गहरी श्रद्धा है।)

नीति और नियत

बात भी हो अच्छे-अच्छे,
व्यवहार में भी सच्चे-सच्चे,
दुनिया सिर्फ नीतियों से नहीं,
नियत से भी बदलती है।

दुनिया सिर्फ नीतियों से नहीं,
नियत से भी बदलती है।

पैदल-साइकिल आम सवारी
इन से नापेंगे दुनिया सारी,
हमारी गाड़ी पेट्रोल से नहीं,
सिर्फ पसीने से ही चलती है।

दुनिया सिर्फ नीतियों से नहीं,
नियत से भी बदलती है।

हिम्मत के साथ नेक इरादे,
करते नहीं हम झूठे वादे,
देश के प्रति ऐसी श्रद्धा से,
दीप से दीप जलती है।

दुनिया सिर्फ नीतियों से नहीं,
नियत से भी बदलती है।

Om. Onkar. Allah. God....
Jai Hind!
Jai Jagat (Universe)!
-Ghulam Kundanam.

9931018391.

What is HINDUISM?

H = Humanity मानवता

I = Integrity एकता

N = Nobility उदारता

D = Divinity ईश्वरत्व

U = Universalism विश्वबंधुत्व

I = Intelligence ज्ञान

S = Service सेवा

M = Meditation ध्यान

Harshit Aggarwal

What is ISLAM?

I= Iman in Allah अल्लाह में ईमान

S= Serenity in living जीवन में पवित्रता

L= Longing for peace शान्ति की अभिलाषा

A= Acceptance of truth सत्य की स्वीकार्यता

M= Message of love प्रेम का संदेश

Alina Hasan

XI Science

Jamia Millia Islamia

Resentment is like drinking poison and then hoping it will kill your enemies.

Smoking lips is injurious to health

Do you watch movie? Definitely, you do.

On screen, actors used to smoke without any disclaimer in old days. It wasn't right and sent a wrong message to our society. After all, film-makers took an action and started showing "Disclaimer" on the screen—Smoking causes cancer.

Actors driving bike without helmets sends another wrong message to our society. So, disclaimer for this section should be like this — Riding bikes without a helmet may be hazardous for you.

Third point is hot scenes. Film makers add hot scenes to their flicks only for more and more profit. But after watching these scenes our youngsters may try to follow the embracement what they watch and it'll not be good for our society. If film makers don't put the scenes, their films may fail at the box-office. Therefore, it's major trouble for both—the film-makers and the society.
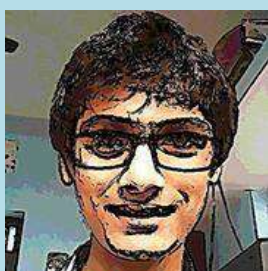
So, to get over these troubles film makers should add a "Disclaimer" to hot scenes also and the disclaimer can go on like this — Embracement may cause misbehave or Smoking lips is injurious to health or Smoking lips may force a sandal on your cheeks.

Kumar Shivam Mishra BA(H) English, Commerce College, Patna

कार्टून कोना अनिल भार्गव

Quitting is leading too.

भूली दास्तान

पंडित नेहरु के हमसफर मेहबूब

फिल्म मदर इंडिया तब तक दुनिया भर में मक़बूल औ' मशहूर हो चुकी थी और भारतीय सिनेमा का गौरव बढा रहा थी| मेहबूब खान ने नारी जीवन पर केंद्रित यह फिल्म अपनी ही बहुत पुरानी सिनेमा औरत (1939) के रीमेक के तौर पर बनायी थी | वे इस फिल्म के बाल कलाकार बिरजू से काफी मुतास्सिर हुए और उसे ही केंद्र में रख कर 1962 में बनायी महत्वाकांक्षी फिल्म- सन ऑफ इंडिया | यह बॉक्स ऑफिस पर तो सफल नहीं हो सकी किंतु इसका एक गीत... नन्हा मुन्ना राही हूँ... हमेशा के लिए बच्चों के फौलादी जज़्बों की बयानगी बन गया | अब वे अब्बा खातून की डायरी पर मबनी अपनी बेहद महात्वाकांक्षी फिल्म पर काम कर रहे थे | 27 मई 1964 की शाम को वे अपने कमरे की टेबल पर इस सिनेमा की पटकथा लिख रहे थे कि आकाशवाणी से पं नेहरु के इंतकाल की खबर प्रसारित हुई | जैसे ही मेहबूब के कानों तक यह आवाज पहुँची कि उनके हाथ से कलम छूट गयी , आँखें नम हो गयीं ओर दिल रो पड़ा | वे अपनी तनहाई में देर रात तक रोते रहे | रोते-रोते उनका दिल बैठ गया | सुबह दिल का दौरा पड़ा और वे भी महज 57 की उम्र में इस फानी दुनिया से कूच कर गये | इस मतलबी दुनिया में इस तरह के वाकयों के नजीर बहुत कम मिले हैं जब एक शख्स ने दूसरे के जाने पर अपनी जान निसार कर दी हो और तब जब उसका खुद के चाहनेवालों की संख्या का अंदाजा लगाना मुश्किल हो और उस इंसान से उसका कोई खूनी वास्ता भी न हो | जहाँ पंडित नेहरु विदेश से शिक्षाप्राप्त विद्वान एवं कुशल राजनीतिज्ञ थे वहीं महबूब प्रेम और अनुभव के कबीरी ज्ञान के पंडित थे| मानवीय भावनाओं के प्रति अत्यंत संवेदनशील दोनों महापुरुष अपने अपने कार्यों के प्रति लगनशील ,कर्मनिष्ठ एवं मेहनती थे| आज इन महान व्यक्तित्वों की स्मृतियों को नमन करते हुए हृदय में एक खामोश प्रतिध्वनि गूंज रही है- ओ जाने वाले हो सके तो लौट के आना |

नंदलाल मिश्रा

There is no such thing as partial freedom.
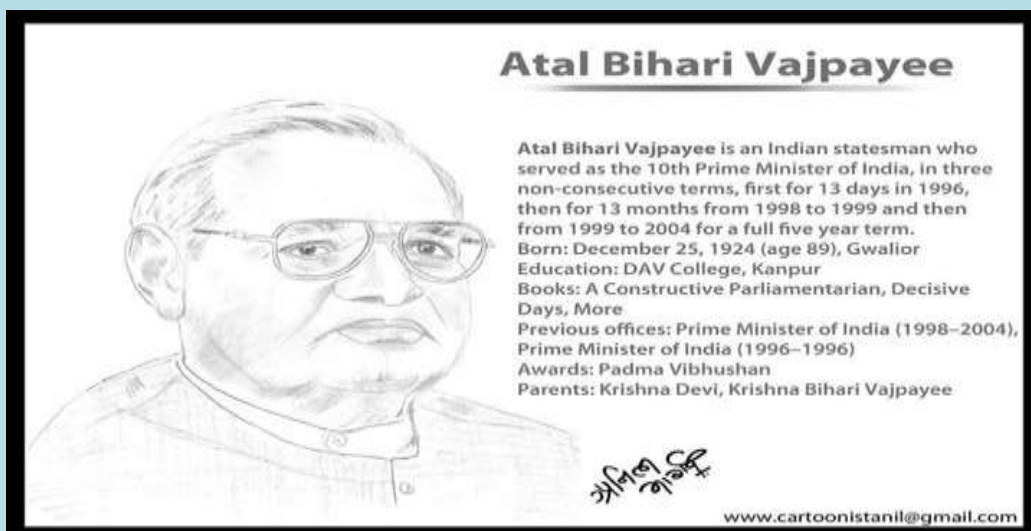
डायरीनामा

इस स्तंभ में हम प्रस्तुत करते हैं 'जीवन मग' के सदस्य लेखकों के डायरी से चुने बेहतरीन पन्ने। पहली कड़ी में पेश है नहीं के बराबर डायरी लिखने वाले नंदलाल की फटी पुरानी डायरी से यह दुर्लभ पन्ना....

14 जनवरी 2012

वे कहते हैं 'गर सुबह का भूला शाम को घर लौट आये तो भूला नहीं कहलाता'....सोचता हूँ लौट आया हूँ। ख़ैर हूँ भी तो एक भटका हुआ मुसाफिर ही....न घर है न ठिकाना....बस अपनी आवारगी में है चलते जाना...। सफलता-विफलता तो जीवन के अनिवार्य पहलू हैं...हार एक सच्चे जीत की राह तय करती है। बस हमें हिम्मत नहीं हारनी चाहिए.....
डर कर कभी नौका पार नहीं होती, कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।
नेपथ्य से एक प्रेरणात्मक प्रवाह एक पुकार लिए आती है...
पाकर जीवन में पहली विफलता पथ भूल न जाना पथिक कहीं।

जीवन मग पर लौटते हुए सत्यम शिवम सुन्दरम् के साथ एक असीम साहस की आत्मानुभुति होती है। इसे तराश कर सही और सटीक दिशा में मोड़ दिया जाए तो सफलता दूर नहीं रह जाती है । फ़ैज़ के अल्फाज़ों में-   ऐ दिल ! ये फ़कत तो एक घड़ी है हिम्मत कर, जीने को उम्र पड़ी है।
वे कहा करते थे - सफलता और ऊँचाई हासिल करना आसान है किंतु इसे बनाये रखना बेहद कठिन । मालूम है पतन उसी का होता है जिसका उत्थान , इसलिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ....
मेरे प्रभु ! वो ऊँचाई कभी मत देना कि गैरों को गले लगा न सकूँ ये रुखाई कभी मत देना ।

जीवन की कठिन राह में सुख-दुख , अमृत-विष , सवेरा-अँधेरा , सफलता-विफलता , राग-विराग तथा आशा-निराशा सब कुछ है । एक के बिना भी जीवन सूना है । बकौल गुप्त जी-
नर हो, न निराश करो मन को,
कुछ काम करो, कुछ काम करो,
जग में रहकर कुछ नाम करो!

यह सब सोच साहस का एक कदम आगे बढाता हूँ कि यकायक दिलोदिमाग में एक मर्मभेदी आहट सी होती है.....
मुझसे मिलने को कौन विकल
मैं होऊँ किसके हित चंचल
यह प्रश्न शिथिल करता पद को भरता उर में विह्वलता है....अकेलेपन का यह एहसास, सदा से साथ निभाने की आकांक्षा को रेत के घरौंदे की तरह ढहा देता है....अकेला हूँ मैं.... किंतु मैंने सुना है 'दुनिया में

नहीं जिसका कोई उसका खुदा है'....गर वो भी मुकर जाये तो कम से कम मेरा 'अकेलापन' तो सदा सर्वदा मेरे संग है ... रवींद्रनाथ की मर्मस्पर्शी प्रेरणा है -एकला चलो रे....सो तय है अब चलना पड़ेगा...नीर ढलता भला और साधु चलता भला ।
रुक जाना नहीं तू ज़िंदगी से हार के
काँटों पे चल के मिलेंगें साये बहार के।
चलते-चलते लबों पर ये तराना उतर आता है....तदबीर से बिगड़ी हुई तकदीर बना ले, अपने पे भरोसा है तो ये दाँव लगा ले....ये दाँव आगामी ज़िंदगी का ही दाँव है ... सोच लिया है- लगा लूँगा...पक्का ! जब नाव जल में छोड़ दी, तूफान ही में मोड़ दी, दे दी चुनौती सिंधु को, फिर पार क्या मँझधार क्या।

सोचता हूँ......नदी के मध्य में पहुँच कर लौटने से बेहतर है कि आगे का ही सफर जारी रखा जाए......

नंदलाल मिश्रा

AMAZING FACTS

- Leonardo da Vinci is supposed to have invented scissors.

- A camel is supposed to last longer without water but Rat can last even longer without it.

- Those who love ice-cream should know that Eskimo Pie is the first chocolate-covered ice cream bar and it was invented in Onawa, Iowa, USA in 1921.

- The world's smallest island country is Nauru.

- The largest producer of gold is South Africa.

- The largest bell in the world is the Emperor Bell in Moscow, Russia. It is 20 ft or1 m tall.

- Do you know what is the name given to that little dot over "i"? It is known as "tittle".

- There are only few words in dictionary that don't rhyme with any other words. These are orange, silver and purple.

- Mount Rushmore is perhaps the most impressive rock formation carved by men. It was made by Gutzon Borglum and took just 14 years to carve it.

- The famous Leonardo da Vinci could write with one hand and draw with the other at the same time.

- Like retina and finger print, every individual also has a unique tongue print.

May your choices reflect your hopes, not your fears.

- There are no less than 717 native languages in a small country known as Papua New Guinea.

- This must be exciting for hummingbirds as they can fly backward as well.

- ENIAC was the name of world' s first electronic computer. It was produced in 1946 and its size was humungous.

- Every Year a staggering number of 50 millions bicycles are produced.

FOR MORE AMAZING STUFF KEEP VISITING www.jeevanmag.tk

& Like Us on Facebook www.facebook.com/jeevanmag

Follow on Twitter www.twitter.com/jeevanmag

GYANESH KUMAR
CLASS X, THE ARYANS, DEHRADOON

शिवधनुष

यह बात तब की है जब मैं 5वीं जमात में पढता था। बिहार के स्कुलों में तब संक्षिप्त रामायण एक विषय के तौर पर पढाया जाता था। एक बार चलती क्लास के दौरान यकायक एक एजुकेशन इंस्पेक्टर अंदर आये ....शिक्षक से कुछ जरुरी बातें की और फिर उंगली के इशारे पर मुझे खड़ा किया...और पूछा - बताओ शिव धनुष किसने तोड़ा? ... मैं कांप गया ...मेरे कंठ सूख गये... किसी तरह हिम्मत जुटा कर रुँधे गले से बोला --हअअजउउर मैंने नहीं तोड़ा... इतना कहना था कि मेरे टीचर गुस्से से बोले-- नहीं सर... यह सरासर झूठ बोल रहा है, इसी ने तोड़ा होगा, यहीं क्लास का सबसे शैतान लड़का है। जवाब में मैं डरते डरते बोला --सअरअअ यकीनन मैं बहुत शैतान हूँ, मअअ...गगर इस क्राइम से अनजान हूँ....आरोप प्रत्यारोप का सिलसिला कुछ देर जारी रहा.... मैं कहता मैंने नहीं तोड़ा... वे कहते तुमने हीई तोड़ा....फिर क्या था साहब हमदोनों को पीछे-पीछे आने का हुक्म सुनाकर प्रिंसिपल रुम की ओर चल दिये। अब हम दोनों सहमे से लग रहे थे। हेडमास्टर ने तुरंत उन्हें कुर्सी दी..... चपरासी को फौरन ठंडा-वंडा और मिठाई हाज़िर करने को कहा और खुद ठकुसुहाती करते हुए आगे के दांत निपोड़ कर परेशानी का कारण पुछा....साब ने पूरा वाकया एक ही सांस में कह सुनाया। हेडमास्टर तो पहले कुछ झिझके किंतु तुरंत छिछालेदर होकर बोले-- बस इतनी सी बात.... अरेएए आप टेंशन मत लीजिये.... धनुष जिसने भी तोड़ा हो मैं उसकी मरम्मत करवा दूँगा.... ....तब जाकर मैंने राहत की एक लंबी साँस ली।

नंदलाल मिश्रा

Trad softly, breath peacefully, laugh hysterically.

विमर्श

संस्कारों की पुर्नस्थापना ही समाधान

कुछ घटनाएं मुर्दा समाज को भी जागने के लिए मजबूर कर देती है। सामाजिक व राजनैतिक परिवर्तन ऐसी ही घटनाओं के गर्भ में आकार लेते हैं। 16 दिसंबर 2012 की रात राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में सामूहिक दुराचार की जघन्य घटना सोए समाज को जगाने वाली ही थी, पर यह घटना भारत वर्ष में पहली बार नहीं हुई है। यह अलहदा बात है कि इस घटना ने दुराचार जैसे जघन्य अपराध को राष्ट्रीय विमर्श का विषय बना कर हम सबको नए सिरे आत्मावलोकन के लिए विवश कर दिया है। धरना-विरोध प्रदर्शन अब भी जारी है किन्तु क्या यह सब हमें भय-मुक्त, सुरक्षित, समतामूलक समाज दिलाने सक्षम है। क्या कड़े कानून बन जाने मात्र से यौन अपराधओं का सिलसिला थम जायेगा?

आवश्यकता यौन अपराधों के पीछे कार्य कर रही मानसिकता और उसको पोषित करने वाली अप-संस्कृति के कारकों को चिन्हित कर समूल निर्मूलन की है। असंवेदनशीलता की हद देखिये कि 16 दिसम्बर के बाद से देश भर में चले रहे प्रदर्शनों के बीच महज 72 घंटों के दौरान देश में करीब डेढ़ सौ बलात्कार की घटनाएं हुईं। यह सरकार के आंकड़े बताते हैं कि देश में हर घंटे दो बलात्कार होते ही हैं। तो समाधान की तलाश के लिए कड़े कानूनों और धरना-प्रदर्शनों से पार देखने की जरूरत है। पहले सवाल उठता है कि क्या बलात्कार जैसा जघन्य अपराध भारत की संस्कृति है? नहीं भारत में स्त्री को पूज्य माना गया है, देवी मान कर आराधना की जाती है।

थोड़ा ग्रामीण भारत की तरफ रुख करते हैं जहां वास्तविक भारत बसता है। हमारे गांवों में जब कोई प्रसूता किसी कन्या को जन्म देती है तो कहा जाता है कि लक्ष्मी ने जन्म लिया है, भवानी घर आई हैं। घर के बड़े बुजुर्गों द्वारा तीज-त्यौहार के दिन छोटी कन्याओं के पैर छू कर आशीर्वाद लेने की परंपरा आज भी कायम है। भारतीय परम्परा देवी उपासक है। देवी यानी स्त्री का ही सर्जक, पालक, संहारक, सम्पूर्णत्व। वैदिक काल से स्त्री गरिमा रही है। ऋग्वेद के अनेक सूक्तों, मंत्रों की द्रष्टा स्त्रियां हैं। स्त्री की ही दिव्य अनुभूति देवी है, मां है। इन्हीं संस्कारों के चलते बस, रेल में ज्ञात अज्ञात बेटी को धक्का लगने के बाद पैर छूकर माफी मांगने की परम्परा थी। किसी भी ग्रामीण की बिटिया पूरे गांव की बिटिया हुआ करती थी। सारा गांव उसका आंगन और गांव के लोग उसके परिवार वाले। कोई चाचा, कोई दादा, तो कोई काका। तीज-त्योहारों पर तो कन्याओं की बन आती थी, मिठाई का मजा तो सबके लिए उस पर बड़ो के द्वारा पैर छूकर आशीर्वाद लेने के संस्कार के कारण खुद के विशेष होने का भाव कुछ अलग ही अनुभूति देता था उनको। वही संस्कार हम लोग भी सहज प्रवाह में आत्मसात कर रहे थे। धीरे-धीरे वह संस्कार विचार बन कर व्यवहार में आने लगे।

हमारे नायक भी आज से भिन्न थे। राम, कृष्ण, शिवाजी, गौतम, महाराणा, भगत और गांधी हमारे नायक थे। उनकी कहानियां संस्कारों का नेटवर्क थी। शायद तभी गलत होने की ग्लानि मन को विचलित कर देती थी। हमें याद है कि प्राथमिक या उसके बाद की शिक्षा के लिए घर से दूर भी जाना पड़ता था, साथ में लड़कियां भी होती थीं, पर मजाल क्या कि

Although I am a gregarious person, I love solitude even more.

कोई उनसे अभद्रता कर दे, हर आता-जाता राहगीर अभिभावक होता था। वह किसी भी बच्चे को उद्दंडता का दंड दे सकता था। यह कोई लिखित संविधान नहीं था बस संस्कारों के प्रवाह से निर्मित संस्कृति के तटबंध थे, जिनके मध्य में हमारी सामाजिक व्यवस्था गति करती थी।

लडकी के विवाह समारोह पर पूरा गांव जुट पड़ता था, गांव भर की खटिया जनवासे में पड़ जाती थी। महिलाएं मंगल गान गा-गा कर व्यंजन पकाती थीं। लगता था मानों समूचा गांव एक घर बन गया हो। सुबह विदाई के समय बाबुल की सोनचिरैया की कुहक से गांव तो गांव राहगीरों की आँखें नम हो जाया करती थी। कैसी अद्भुत साझा, सहकारी संस्कृति थी हमारी। भला यहां दुराचार जैसे जघन्य अपराध कैसे संभव हो? पर आज वह संस्कृति दरकने लगी है। हम आधुनिक होने की कीमत पर अधम होने लगे हैं। विचार का स्थान विकार ने ग्रहण कर लिया है। अब कन्या लडकी हो गई है और नग्नता संस्कृति। कोई सुनने वाला नहीं है। संयुक्त परिवार विघटित होकर एकल परिवार में सिमटने लगे हैं। अब तो एकल परिवारों का वजूद भी खतरे में है। लिव इन रिलेशन उसको अतीत करने पर अमादा है। संयुक्त परिवारों के समय अदब, लिहाज और अनुशासन एक परिपाटी की भांति स्वतरू सामान्य कार्य व्यवहार का हिस्सा बन जाता था। भावनात्मक सुरक्षा व संबलता भी रहती थी।

पर आज भौतिकता की आंधी ने सब कुछ तहस-नहस कर दिया। आर्थिक सम्पन्नता की हवस ने संस्कार के समस्त तटबंधों को दरका दिया। सारी परम्पराएं अब बकवास हैं। अब कन्या, सिर्फ लडकी है। वह आखेट की वस्तु है। आखेटक अब बेखटके हैं। सारा समाज एक बाजार बन गया है। बाजार, जहां सब कुछ खरीदा और बेचा जाता है। जहां मुनाफा ही सही गलत के पैमाने तय करता है। बाजार ही नए समाज के मूल्यहीन जीवन शैली को गढ़ रहा है। उसने संवेदना, नैतिकता और मानवीय मूल्यों को पिछड़ेपन के प्रतीक के रूप में समझाने और स्थापित करने की सफल कोशिश की है। संवेदना और विवेक बाजार के लिए अनुपयोगी हैं। वह इसे जीवन के लिए भी अनुपयोगी बनाने की कवायद कर रहा है।

बबूल बोने पर आम की ख्वाहिश करना मूर्खता है। इसी तरह समाज के दिमाग में कामुकता भरकर आप यह उम्मीद नहीं कर सकते कि वह उसे सदवृति में बदल लेगा। लगभग हर विज्ञापन, हिंसा और अपराध की कथाएं मनोरंजक बना कर चटखारे लेकर परोसी जाती हैं, जिनमें अपराध का न तो विश्लेषण किया जाता है और न उसे गंभीर समाजशास्त्रीय नजरिए से प्रस्तुत किया जाता है। सभी चैनल मनोहर कहानियों का विजुअल संस्करण बन गए हैं। दिन-रात चैनलों पर हिंसा, हत्या, बलात्कार देख कर जाहिर है एक हिंसक, मानसिक रूप से विकृत और कुंठित समाज ही बनेगा।

माफ कीजिए युवा पीढ़ी ने तो बहुत निराश किया है। सबसे ज्यादा आधुनिकता का दुष्प्रभाव तो ''युवा-अंधड़'' पर पड़ा है। अपना भला-बुरा आप सोचने वाली यह पीढ़ी किसी के प्रति खुद को जिम्मेदार मानने से इंकार करती है। ज्यादा पूछताछ को इंटरफेयर बताती है। गौरतलब है कि इंटरफेयर न करती है और न चाहती है। भावनाओं के कोमल तंतुओं से बंधे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी आदि सम्बन्धों के आत्मीय बंधन ढीले पड़ गये हैं। अब माता-पिता वह ''एटीएम मशीन'' बन गये हैं जिसमें ''भावनाओं'' का कार्ड इंटर करने के पश्चात ''अहसासों'' का कोड दबाते ही ''संसाधनों'' की मुद्रा प्राप्त हो जाती है।

बाल्यकाल में जिन पिता की उपस्थिति में बाजार के सारे खिलौने अपने मालूम पड़ते थे, जिनकी उपस्थिति सुरक्षा की गारन्टी थी, अब बोझ में बदल गयी है। बेजुबान बच्चे के हाव-भावों से सब कुछ समझ जाने वाली मां अब ''समझदार'' बच्चे की कोई बात समझ नहीं पाती है। कभी परीक्षा के दिनों में शगुन का टीका बनकर सामने खड़ी रहने वाली मां अब तरक्की में रुकावट प्रतीत होने लगी है। बालसुलभ प्रश्नों जैसे कौआ काला क्यों होता है? जलेबी में रस कैसे भर जाता है? पापा बड़े होकर हम क्या बनेंगे? बादल कहां से आते हैं? आदि के कौतुक को पिता अत्यन्त आत्मीयता से शांत करने की कोशिश करते थे, किन्तु आज जब देर रात घर लौटते बेटे-बेटियों से देरी का कारण पूछते हैं तो ''आप नहीं समझोगे'' उलाहनापूर्ण उत्तर मुंह पर दे मारा जाता है।

वक्त बदल गया है। सम्बन्धों के मायने भी कहीं खो गये हैं। मूल्यों की सुविधानुसार परिभाषायें गढ़ ली गयी हैं। संस्कृति कल्चर हो गयी है और परम्परा पोंगापंथी का पर्याय बन गयी है। असंवेदनशीलता 'थ्रिल' और टूटती वर्जनायें 'रोमांच' देने लगी हैं। टूटती वर्जनायें जब रोमांच पैदा करने लगें और जब आह, वाह में तब्दील होने लगे तो पतन के स्तर की बात खुद-ब-खुद बेमानी हो जाती है। रिश्तों का खून परिवार जैसी पुनीत व्यवस्था को भी लांछित कर रहा है। दुष्कर्म के आंकड़े तो यही बताते हैं 47 प्रतिशत बलात्कार के मामलों में तो लडकी के घर, परिवार, रिश्तेदार के लोग ही शामिल पाये जाते हैं, इनके लिए जो सामाजिक, नैतिक मानदण्ड बनाये गये हैं उनको तोडने की इच्छा किन कारणों से होती है और उसे कैसे रोका जाय, इसका उपाय केवल दण्ड की सीमा बढ़ाना ही नहीं है। जब बाप के खिलाफ भी बेटियों द्वारा दुष्कर्म की शिकायतें दर्ज कराई जायें और पदों पर बैठे लोगों को भी इसके लिए दोषी ठहराया जाये तब यह कहना उचित नहीं होगा कि केवल गुण्डे, दरिंदे या ऐसे लोग जिनकी अपराध में रुचि है, वे ही इसके मूल कारण हैं। पदों और स्थितियों का लाभ उठाने वालों को कैसे रोका जाये, यह भी मुख्य प्रश्न है।

यह सत्य है कि कानून बन जाने से गुनाहों की रोक में बड़ी मात्रा में सफलता मिलती है लेकिन जब मेड़ ही खेत को खाने लगे, जब बाबुल ही बहेलिया बन जाए, जब जीवन-साथी ही अपनी अर्धांगिनी की अस्मत लुटवाए तब कौन सा कानून मुहाफिज होगा? अब संस्कारों की पुर्नस्थापना ही समाधान दे सकती है। जनजागरण के माध्यम से सामाजिक चेतना की जागृति ही पुन: ऐसी व्यवस्था की रचना कर सकती है जो कदाचार, दुराचार और अनाचार से मुक्त होगी।

(बिनय कुमार उपाध्याय जयप्रकाश नारायण विश्वविद्यालय के शोधछात्र हैं । आप पूर्वी चम्पारण काँग्रेस कमिटी के महासचिव-सह-प्रवक्ता भी हैं।)

Literature @ its best- Chosen classics

एक आदमी रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है

एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है
वह सिर्फ़ रोटी से खेलता है

मैं पूछता हूँ--
'यह तीसरा आदमी कौन है ?'
मेरे देश की संसद मौन है।

- सुदामा पाण्डेय 'धूमिल'

A winner is a dreamer who never gives up.

Tech Mantra- Download youtube videos without any downloader

What You will need :
1. VLC Media Player
2. A working internet connection

PROCEDURE-

1.Copy the URL of the YouTube video you want to download
e.g- http://www.youtube.com/watch?v=q3sx9BEubdw

2. Open VLC Media Player on your computer.

3 . Go to Media >> Open Network Stream or you can also press Ctrl+N to open required window.

4. Paste the YouTube video URL here and click on Play button on bottom side.

5. Now YouTube videos will start to play in VLC media player. while playing YouTube video in VLC media player. Go to Tools >> Media Information. This will open Media information window.

6. Copy the location of video.

7. Open any browser preferably Google chrome and paste the location of video copied from earlier step in address bar.

8. This will open that particular YouTube in your browser. While playing this video in browser, right click on video and select Save Video as option to save YouTube video at desired location.

9. In other browsers except Google chrome, you need to add file extension like mp4, flv, mpeg after file name while saving YouTube video.

e.g- http://www.youtube.com/watch?v=q3sx9BEubdw.mp4

So, Friends. Now, Uninstall all your Rubbish youtube downloaders. They slow up your system and have the potential to harm it.

Stick to Jeevan Mag's Facebook Page for Regular Updates www.facebook.com/jeevanmag

Tech Mantra by- Faisal Alam
Public Relations officer
Jeevan Mag

I am the captain of my soul.

Krrish 3: Taking the Indian Celluloid a step ahead

4.3 out of 5 Stars

This Diwali, Rakesh roshan lights up the Bollywood screen space with some really ***awesome*** & watchable flick. ***Krrish 3*** brings home the idea that however powerful the evil is, it has to lose to the goodness at last. Needless to say, the movie envisages the growing standard of the Indian Cinema. We are fortunate to have got a ***Desi*** Superhero with Indian spirit & values.

Krrish 3 has the power to amaze you with its ***marvellous action*** sequences & VFX effects. But, at the same time what disheartens you is that Rakeshji has failed to shoo off the holly impression. One can easily deduce that the movie is influenced by X-Men, Spiderman, Superman, Tron - It's not witty to make the complete list. For all those who haven't seen Koi Mil Gaya... & Krrish (I don't think someone in the world hasn't!), a quick recap is there at the starting. The plot, despite being ***fragile*** & average, is quite ***quirky*** & entertaining. The way the products have been
advertised throughout the movie is creative as well as comic.

Believe it or not, the whole storyline revolves round a Flair pen which ***Rohit*** (Hrithik Roshan) has turned into a revolutionary device that has the possibility to employ sunlight to restore life into dead matter. ***Krishna*** aka Krrish (Again, H.R) is a real-life guy who gets fired from one after the other job owing to his abscence from the workplace. He is absent only to don up the Krrish Suit & fight the menace.He is living his life happily with his scientist father Rohit & loving wifey ***Priya*** (Priyanka Chopra) who is a TV reporter.
Meanwhile, on the other side of the globe, ***Kaal*** (Vivek Oberoi) is obliged to destroy the humane world with the group of mutants (Manav+Janwar= ***Manwar***) he has created. He is restricted to a wheelchair & his origin is yet another suspense. The Manwars, which include ***Kaya*** - a mix of human & chamaleon (Kangana Ranaut), Frogman, Antman, Rhinoman & Cheetahwoman etc., add to the charm of the movie. Kaal develops a new virus & spreads it first in Namibia & then in India. In Namibia, he makes loads of money by employing its antidote but in India, Rohit manages to create the ***antidote*** (It's interesting to see how!) & then starts the real action. The war between the evil & the goodness is worth seen. Now, how Krrish is different from the holly action flicks? Added to action, Krrish 3 has an amount of emotion, romance & of course the traditional bollywood ***dialoguebaazi*** .

The ***tramendous acting*** by the whole starcast comes to rescue the average screenplay & storyline. ***Hrithik Roshan*** steals the show once again. He has got into each and every frame with a captivating perfection. The

Greek God has been earnest & energetically cool throughout the movie. His superb acting leaves you dumbstruck. He leaves you under the impression that he is the only bolly guy able to don on the superhero getout. You'd see that when compared to the hollywood superheroes, he isn't a single notch below them. ***Vivek Oberoi*** has done a fab job as the intelligent and powerful, devillous & intense antagonist. ***Kangana Ranaut*** has clearly overshone the leading lady ***Priyanka Chopra*** . She has managed to make her face emotionless when needed. The narrative gets strong & emphatic in ***Big B*** 's voice. The dialogues make us remember the ***pompous*** mid-era bolly movies. A part of the audience would like it but at the same time there would be people to consider the dialogues wacky & over-the-top.

The direction is above the notch & ***Rakesh roshan touch*** makes the movie a perfect bonanza for family audience. The action is ***teeth-biting*** & you'd surely get spellbound to see that Indian cinema has got such an action marvel.
The music section is weak & Rajesh roshan has followed the ***ghisa-pita*** mid-aged pattern not to recreate any magic. The theme music (taken from Krrish) is nevertheless soul- soothing & awe-inspiring.

Raghupati Raghav song is okay, Thanks only to HR for his thumping dance performance. ***Dil tu hi bata*** is a sort of song which pleases one & tenses the other. ***God Allah aur Bhagwan*** emphasizes the grandiloquence & mass appeal of Krrish, but is highly unoriginal. If the movie were in ***3D***, it would have been great.

Overall, Krrish 3 is ***a must go for*** & if you have ***kids***, you don't have any right to devoid them of having loads of fun. The movie probably would get on your nerves too.

Caution- First shed off your Hollywood penchant and just then go to the theatres to appreciate the movie! :-D

Story- 3.5/5 Stars
Acting- 4.7/5 Stars
Action- 4.7/5 Stars
Direction-4.5/5 Stars
Music- 3/5 Stars
——————————
Krrish 3- 4.3/5 Stars

Some extra points for the ***zealous & zesty*** Hrithik Roshan....Hats off!!!

AKASH KUMAR

चित्र- केसरिया स्तूपः विश्व का सबसे ऊँचा बौद्ध स्तूप

"सत्याग्रह टाइम्स" के फरवरी २०११ अंक में प्रकाशित प्रमुख संपादक **आकाश कुमार** का मोतिहारी-केसरिया-वैशाली यात्रा संस्मरण।

सत्याग्रह टाइम्स 5

तिरहुत में विहार

आकाश कुमार

मोतिहारी। आज दिनांक 30.01.12 को महात्मा गाँधी के शहादत दिवस पर उनको श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु अपने घर से परिभ्रमण पर निकल पड़ा। सर्वप्रथम मैं अपने घर से महात्मा गांधी स्मारक सह संग्रहालय पहुँचा। गाँधीजी से जुड़े सामानों व उनके चित्रों को देख उनका रसास्वादन किया। संग्रहालय से निकलते ही गांधी औषधि वाटिका के दर्शन किए। वाटिका में नील, जो भारतीय सहनशक्ति व अंग्रेजी क्रुरता का प्रतीक है, आकर्षण का केन्द्र बना। आगे गांधी शांति स्तम्भ विश्व समुदाय को सत्य व अहिंसा का संदेश दे रहा था। स्तम्भ से पूर्व ही मार्ग के दोनों ओर दो बड़े-बड़े संगमरमर के पट्टों पर गांधीजी का 1917 में एसडीओ के सामने नीलहों के अत्याचार से त्रस्त कृषकों के पक्ष में दिया हुआ बयान लिखा था। पढ़कर अच्छा लगा।

फिर हमलोगों ने राजा बेन की नगरी केसरिया के लिए प्रस्थान किए। वहाँ पहुँच कर हम सर्वप्रथम केसरनाथ मन्दिर गये। महादेव की उपासना की व रक्षासूत्र बंधवाये। फिर हम विश्व के सबसे ऊंचे बौद्ध स्तूप के दर्शन को गये। इसकी ऊंचाई 104 फीट 10 इंच है। स्तूप की भव्यता देखते ही बनती थी। केसरिया का इतिहास गौरवशाली रहा है। इसका प्राचीन नाम रामग्राम है। सम्राट अशोक ने इसका नाम बदल केसरिया किया। भगवान बुद्ध को अपने पहले गुरू अनारकलाम के यहीं दर्शन हुए थे। ऐसा मानना है कि बुद्ध पूर्व जन्म में रामग्राम के चक्रवर्ती सम्राट बेन थे। उन्होंने कुशीनगर में निर्वाण के पूर्व यहीं शिष्यों को अपना भिक्षापात्र व अंतिम उपदेश दिया था।

केसरिया की यात्रा के पश्चात हम वैशाली जिले में स्थित कोल्हुआ गये। वहां हमने एक स्तूप व एक अशोक स्तम्भ देखा। अशोक स्तम्भ करीब 11 मीटर लम्बा व बलुआ पत्थर निर्मित था। उसके निकट के जलाशय के उस पार बौद्ध भिक्षु ध्यान लगाये बैठे थे। उन्हें देख मुझे सहसा राहुल सांकृत्यायन की याद आ गयी। राहुलजी एक लेखक थे जिन्हें उनके बौद्ध धर्म पर किये गये कार्यों ने ख्याति दिलायी।

वहाँ के उद्यान में विचरण के पश्चात हम वैशाली रवाना हो गये। वहाँ हमने सर्वप्रथम जलाशय अभिषेक पुष्करिणी देखी। संभवत: यह वही सरोवर है, जिसके जल से लिच्छवियों का राज्याभिषेक होता था।

1957-58 में डा. ए. एस. अल्तेकर के दिशा-निर्देश में यहाँ खुदाई हुई। खुदाई के क्रम में कुछ सिवेक व शुंगकालीन मूर्तियां प्राप्त हुई। विद्वानों का ऐसा अनुमान है कि प्रारम्भ में लिच्छवियों का परिवार छोटा रहा होगा। परन्तु ई.पू. दूसरी सदी के आसपास इसमें बढ़ोतरी हुई होगी। सरोवर के अवलोकन के पश्चात हम पुरातत्व संग्रहालय की ओर रवाना हुए। इसके दरम्यान हमें श्रीलंकाई व वियतनामी मन्दिर के दर्शन हुए। पुरातत्व संग्रहालय की स्थापना 1971 में उत्खनन से प्राप्त बुद्ध की मूर्तियां व अन्य प्राचीन वस्तुओं के लोक अवलोकन के लिए हुई थी।

जब भगवान बुद्ध ने कुशीनगर में निर्वाण प्राप्त किया तो उनके आठ समर्थक राजाओं में उनके पार्थिव शरीर की राख के लिए लड़ाई हो गयी। आठों राजाओं को स्वर्णकलश में रखकर उनकी राख दी गयी। उन राजाओं में 7 राजाओं के नाम का जिक्र है। वे हैं-1. मगध के अजातशत्रु, 2. रामग्राम के कोलिय, 3. वैशाली के लिच्छवी, 4. वेठदवीय के ब्राह्मण, 5. कपिलवस्तु के शांक्य, 6. कुशीनगर के मल्लव, 7. पावा के मल्ल।

उद्यान में भगवान के शरीर की राख जहां रखी गयी थी, वहां पूर्व में एक स्तूप था जिसे लिच्छवियों ने पांचवी सदी ईपू. में बनवाया था। 8.07 मीटर व्यास के उस स्तूप का व्यास मौर्य, शुंग व कुषाणों के साथ-साथ बढ़ते-बढ़ते 12 मीटर हो गया।

1958 की खुदाई में यहां से एक मंजूषा प्राप्त हुई जिसमें भगवान के शरीर की राख के साथ कौड़ी, मनके, स्वर्ण पत्र, ताम्र आहत मुद्रा आदि मिले। फिर हम जापानी नौलख मंदिर गये, जहां भगवान बुद्ध की चार मुद्राओं में पीतल निर्मित मूर्तियां जापानी बौद्ध वास्तुकला का शानदार नमूना दर्शा रही थी। वहीं 38 मीटर ऊंचा एक शांति स्तूप था, जो जापानी संस्था निप्पोजान म्योहोजी द्वारा 1983 में निर्मित हुआ था। फिर हम मोतिहारी की ओर प्रस्थान किये।

रात्रि के स्वप्न में भी मुझे गाँधी की देश के शहादत एवं बौद्ध वास्तुकला के दर्शन हो रहे थे।

लेखक सत्याग्रह टाइम्स के जुनियर एडिटर हैं।

I dream of an Africa which is in peace with itself.

OPINION

JOINT FAMILY SYSTEM: A BOON FOR A GROWING CHILD

The joint family system has been a vital part of Indian tradition. It has been responsible for our good values & ethos to a great extent. But Alas! Urbanisation & modernisation have done a great damage to this. We and our thoughts have been constricted into flats of 8X8. People living in nuclear families are unable to care for their children & it leads to devastation. Father and mother both are working & there is no one to accompany the child, no one to kindle the fire of goodness & ethics in him. Yes, it's a situation much common in cities, especially in Metros.

I am really lucky to be a member of a joint family. In a joint family, there are grandparents to instill in you, the required moral values and uncles & aunts to provide you with the essential zeal & zest to do something good & grand. There are a lot of people to keep a protective & caring eye upon the child which certainly helps him to progress in the right direction. The child lives his childhood to its fullest only in the joint families. One gets a lot of love & wisdom & if there are younger siblings & cousins, it adds up to the grandeur of childhood. It's a great experience which helps the child face every possible adversity in his/her future.

In my opinion, nuclear families must be discouraged in order to have a progeny of ethical, sensible & brilliant people.

AKASH KUMAR

सफाई (लघुकथा)

दो सिरफिरे फिलॉसफर जोर जोर से बातें करते जा रहे थे |
पहला कह रहा था - देखो!
मुझे सफाई बहुत पसंद है
सो मैं हमेशा अपने आप को
गंदगी से दूर रखता आया हूँ|
दूसरा तपाक से बोल पड़ा-देखो!
गंदगी मुझे भी बिलकुल पसंद नहीं
सो मैं सदा से इसे अपने से दूर हटाता आया हूँ |
थोड़ी देर के लिए मैं भी सिरफिरा हो गया |

नंदलाल मिश्रा

Aashiqui 2

Sketch by- **ARYAN RAJ**, XI Science, Allen Career Institute,Kota (P.R.O, Jeevan Mag)

Money won't create success, the freedom to make it will.

चलते चलते.....

आना देखा जाना देखा एक मुसाफ़िर खाना देखा....आहिस्ता आहिस्ता साल 2013 यादोँ की कुछ दसबीसियाँ छोड़ गुजर गया। इस साल कई हस्तियोँ ने संसार को अलविदा कह दिया। एक कभी ना भूला सकने वाला नाम गाँधी की विरासत को बुलंद करने वाले मदीबा का है। मन्ना डे की सुरीली आवाज भी खामोश हो गयी। सचिन और पोंटिंग सहित कई दिग्गजों ने क्रिकेट को अलविदा कह दिया। भारतीय राजनीति में केजरीवाल के सहारे आम आदमी ने बदलाव की एक आशाभरी बयार बहा दी। हमारा मंगल मिशन भी कामयाब रहा। उत्तराखंड की आपदा में जहाँ लाखों जानें गयी तो दूसरी तरफ हमने फैलिन के उत्पाती इरादों का करारा जवाब दिया ।...... साल 2014 का आगाज भी हमारे लिए धमाकेदार रहा जब हमारा क्रायोनिक इँजन जीएसएलवी डी5 का प्रक्षेपण सफल रहा। इसी साल अप्रैल में लोकसभा चुनाव भी होने हैं। नये साल में नये संकल्पों की पुनरावृति एक फैशन बन कर रह गयी है। अकबर इलाहाबादी के अल्फाजों में - इस फरेब में हमने सदियों गुजार दी कि नया साल गुजिस्ता साल से बेहतर हो ।

बहरहाल समस्त चराचर को नववर्ष की शुभकामनाएँ। आपके स्नेह और आशीर्वाद की बदौलत अब 'जीवन मग' मासिक रुप में आपको सौंपते हुए अतिउत्साहित हो रहा हूँ। आपकी शिकायतों, प्रशंसा और सुझावों का हार्दिक स्वागत है। अपने विचारों से जरुर रुबरु कराने की कृपा करें । धन्यवाद !

अगले अंक तक.... नमस्कार !

नंदलाल मिश्रा

जीवन मैग- अमन का पैगाम कार्यक्रम

इंसान का हो इंसान से भाईचारा, यहीं पैगाम हमारा We are going to start....a series of facebook live chat every saturday night between HINDUSTANI and PAKISTANI school students in order to improve the relations of both the countries. If you are a school student and want to participate in this program, Please drop us a line at akash@jeevanmag.tk or nandlal@jeevanmag.tk. You can also call us at +91 7827992817 or +91 9631021440.

Director- Nandlal Mishra

Powered by JEEVAN MAG (www.jeevanmag.tk)

HAPPY NEW YEAR 2014

HAPPY REPUBLIC DAY- 26th JANUARY

NATIONAL YOUTH DAY-12th JANUARY

KEEP IN TOUCH WWW.JEEVANMAG.TK

LIKE US WWW.FACEBOOK.COM/JEEVANMAG

FOLLOW ON @JEEVANMAG

Published by Akash Kumar on the behalf of Blue Thunder Student Association, Motihari for free online distribution purposes.